International Journal of Applied Research 2016; 2(4): 618-620

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(4): 618-620
www.allresearchjournal.com
Received: 12-02-2016
Accepted: 13-03-2016

Kavita Sharma
Asstt. Professor Department of B.Ed Vijay Memorial College of Education Ner Chowk Distt. Mandi, H.P India.

Correspondence
Kavita Sharma
Asstt. Professor Department of B.Ed Vijay Memorial College of Education Ner Chowk Distt. Mandi, H.P India.

भारत के प्रमुख शिक्षाशास्त्रीयों (स्वामी विवेकानन्द, रविन्द्रनाथ टैगोर तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुसार पाठ्यक्रम संकल्पना का अध्ययन)

Kavita Sharma

Abstract
प्रस्तुत लघु शोध में स्वामी विवेकानन्द, रविन्द्रनाथ टैगोंर तथा गांधी जी के शिक्षा सम्बधी विचारों तथा उनकी वर्तमान समाज में प्रभाव को उजागर किया है। शिक्षा समाजिक परिवर्तन के लिए एक सुनियोजित प्रयास है और शिक्षा शास्त्री उस प्रयास को मूर्तरूप प्रदान करते है। राष्ट्र के उच्च मानवीय मुल्यों युक्त युवा पीढ़ी प्रदान करना शिक्षा का एक महत्वपूर्ण कार्य है।

भारतीय दर्शनिकों ने शिक्षा को मुक्ति का साधन माना है तभी भारत "विश्वगुरू" की उपाधि से विभूशिम हुआ है,। इनके अनुसार वही विद्या है, जिससे मुक्ति मिल सके और अविद्या से मृत्यु को पार करके विद्या से अमृत्व प्राप्त करे। शोधार्थी ने इस लघु शोध को सम्पूर्ण करने के लिए सर्वमान्य दर्शनिक एंव ऐतिहासिक शोध विधि को उपयोग में लाया है।

खोजशब्दों: शिक्षाशास्त्रीयों, युवा पीढ़ी, स्वामी विवेकानन्द, रविन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी दयानन्द सरस्वती

प्रस्तावना
वास्तव में भारत की इस पावन धरती पर अनेकों ऐसे शिक्षा–शास्त्रीयों ने जन्म लिया है, जिनकी प्रतीभा को शब्दों में सकुचित सीमा में बॉधा नही जा सकता है। वास्तव मे भारत की इस पावन धरती पर अनेकों ऐसे शिक्षा शास्त्रीयों ने जन्म लिया है, जिनकी प्रतिभा को शब्दों की संकुचित भाषा में बॉधा नहीं जा सकता। इन्होने भरतीय शिक्षा को नये आयम दियें, सिके कारण भारतीय शिक्षा को नये आयम दिये, जिसके कारण भारतीय शिक्षा पद्धति देश में नहीं, अपितु विदेंशों मे अपनाई जा रही है तथा इनका जीवन दर्शन एंव शिक्षा दर्शन समस्त विश्व के लिए अनुकरणीय है। इन महान शिक्षा शास्त्रीयों में जो प्रमुख नाम उभर कर आते हैं वे – स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गॉधी, रविन्द्रनाथ टैगोर आदि इन शिक्षा शास्त्रीयों भारतीय इतिहास के क्षेत्र में महत्वपुर्ण योगदान दिये है।

हमारी मातृभूमी में जन्में समाज सुधारक दार्शनिक शिक्षाविद आदि के विचार एंव उनके आर्दश किसी रूप मे अन्य देश के दर्शनिकों एंव शिक्षाविदों के विचारों से किन्चित आदि कम नही जा सकते हैं। इनके शैक्षिक विचार निःसन्देह हमारी शिक्षा व्यवस्था जो नकारात्मक दृष्टिकोणों से अभिभूत हो चुकी है। उनमें सकारात्मक परिर्वन कर सकते है और विद्यार्थियो, शिक्षा प्रबन्धकों मे हमारी सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप आशा की किरण प्रज्जवलित कर सकते है। स्वामी विवेकानन्द, रविन्द्रनाथ टैगोर एंव महात्मा गॉधी से :–

अधिक उपयुक्त अन्य कोई इस प्रकार के विचारक हो ही नही सकते जिन्होनें आध्यात्मक व व्यवहार में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया है। इन शिक्षा शास्त्रीयों के शि क्षा सम्बधी विचार जो इन्होने दिए, उन विचारों तथा सिद्धान्तों को, यदि वर्तमान समय में अंगीकार करें तो क्या उचित है या अनुचित। इसे ही जॉचना शोध का प्रमुख औचित्य है।

शोध के उद्देश्य
1. भारत के प्रमुख शास्त्रीयों के शिक्षण उपागम के अनुसार पाठ्यक्रम का अध्ययन।
2. भारत के प्रमुख शिक्षाशास्त्रीयों के प्राठ्सक्रम सम्बन्धी विचारों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे प्रांसगिकता।

शोध का सीमाकंन

1. प्रस्तुतशोध अध्ययन भारत के प्रमुख शिक्षा– शास्त्रीयों में से स्वामी विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती एंव रविन्द्रनाथ टैंगोर पर केन्द्रित होगा।
2. यह अध्ययन केवल प्रथामिक तथा गौण दोनों स्त्रोतों से सग्रंहित सूचनाओं पर केवल पाठ्यक्रम संकल्पना पर आधारित होगा।

शोध विधि

शोधार्थी ने इस शषोध को पूरा करने के लिए सर्वमान्य दर्शनिक एंव एंतिहासिक शोध विधि को अपना विषय बनाया है। इस विधि का उद्देश्य अतित की घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करना नही बल्कि उन धाराओं के क्रमिक विकास का विश्लेषण करना है जो इतिहास के विभिन्न कालों में उदित एंव विकसित हुए हैं।

प्रमुख शिक्षा शास्त्रीयों के अनुसार पाठ्क्रम का अध्ययन

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार पाठ्यक्रम का अध्ययनः–

भारतीय ससंकृति का आधार "आध्यात्म" है और इससे रहित कोई पाठ्यक्रम सार्थक नहीं हो सकता। जीवन को परिपूर्ण बनाने के लिए शिक्षा का आधार आध्यात्मिक होना चाहिए।

स्वामी जी अध्ययन को तपस्या मानने के साथ–साथ, हिन्दुओं की ध्यानोन्मुखता को वैज्ञानिक अन्तर्दृष्टि की उपलब्धि में सहायक समझते है। किसी सम्प्रदाय विशेष को धर्म की संज्ञा देना वे उचित नहीं मानते। उनकी दृष्टि में धर्म एक साधन है, एक अनुभूति है, आत्मा साक्षात्कार है। स्वामी जी लिखते है–"अत्यधिक मानसिक प्रशिक्षण से अधर्मी मनुष्य का निर्माण होता है। पाश्चात्य शिक्षा का एक दोष है। यह मनुष्य को अत्सन्त स्वार्थी बना देती है"। उन्होने मानसिक बौद्धिक तथा आध्यात्मिक बल के साथ–साथ शारीरिक बल को भी आवष्यक माना है। उन्होनें अपनें छात्र से कहा था–"तुम्हे शरीर शक्तिशाली बनाने की विधि जाननी चाहिए और उसकी शिक्षा दूसरों को भी देनी चाहिए। युवकों के सम्मुख भाषण देते हुए एक बार उन्होने यहॉ तक कहा कि गीता का मर्म समझने के लिए शारीरिक शाक्ति आवष्यक है। शक्ति ही जीवन की कमजोरी और मृत्यु है। शक्ति परमसुख है और अजर अमर जीवन है कमजोरी कभी न हटने वाला बोध और यन्त्रणा है, कमजोरी ही मृत्यु है. मेरे तरूण मित्रों। शक्तिशाली बनो, मेरी तुम्हें यही सलाह है। तुम गीता के अध्ययन की अपेक्षा फुटबाल द्वारा स्वर्ग के अधिक समीप पहुॅच सकोंगे। जब तुम्हारा शरीर मजबूती से तुम्हारे पैरों पर खड़ा रहेगा और तुम अपने को मनुष्य अनुभव करोगे, तब तुम उपनिश्द् और आत्मा की महानता को अधिक समझ सकोगें।

रविन्द्रनाथ टैगोर

टैगोर में देश प्रेम तथा जनकल्याण की भावना प्रबल थी। अतः वे व्यक्तियों में राष्ट्रीय एंव अर्न्तराष्ट्रीय भावना इस दृष्टि से उन्होनें पाठयक्रम में अपने देश की भाषा, संस्कृति तथा सभ्यता के साथ–साथ देश की भाषा, संस्कृति के अध्ययन पर बल दिया। टैगोर पाठयक्रम में राष्ट्रीय विषयों के साथ–साथ मानवता का विकास करने वाले विषयों को महत्वपूर्ण स्थान देने के समर्थक हैं। शन्ति निकेतन में उनके द्वारा लागु किया गया पाठ्यक्रम संकीर्ण नही था। टैगोर ती पुस्तकों की अपेक्षा प्रकृति से शिक्षा ग्रहण करने के पक्षपाती थे अर्थात वह अपनी शिक्षा प्रणाली में प्रस्तकों की भूमिका नगण्य समझते थे। टैगोर ने उच्च कोटि की पुस्तकों की रचना थी किन्तु वे बच्चों को पुस्तकों बोझ से दूर रखना चाहते थे। बाद में ऊॅची कक्षाओं में पुस्तकों का सहारा लेना चाहिए। उनके अनुसार पाठ्यक्रम को इतना व्यापक होना चाहिए कि बालक के जीवन के सभी पक्षों का विकास हो सकें। विश्व भारती में इतिहास, भूगोल, विज्ञान,साहित्य क्षेत्रिय अध्ययन, भ्रमण, ड्राइंग, मौलिक रचना, संगीत, नृत्य आदि की भी शिक्षा का विषेश प्रबन्ध है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुसार पाठयक्रम

स्वामी जी ने शिक्षा का काल जन्म से लेकर 25 वर्ष की आयु तक निष्चित किया है। उन्होनें बतलाया कि माता 5 वर्ष की आय तक बालक की शिक्षा की व्यवस्था करेगी। इस काल में बालकों कों अच्छी आदतों के निर्माण की उतम आचरण की तथा भाषा की शिक्षा दी जाएगी और बालक अपना अधिक समय खेंल–कूद में बिताएयेगे।

5 से 8 वर्ष की आयु तक बालक शब्द ध्वनि अर्थात वर्णो के उच्चारण का ज्ञान करेंगे तत्पष्चात लिपि का ज्ञान करेंगें। इसके बाद उन्हें पाणिनीकृत व्याकरण तथा पंतजली द्वारा रचित महाभाश्य का ज्ञान दिया जाएगा।

11 से 15 वर्ष की आयु तक बालक निघण्टु निरूक्त तथा पिंगलाचार्य द्वारा लिखित छन्द ग्रन्थ का अध्ययन करेंगें। इसके बाद उन्हें मनुस्मृति, बाल्मिकी रामायण तथा धार्मिक ग्रन्थों की शिक्षा दी जाएगी। इसके उपरान्त वे शश्टदर्शनों (पुर्ण मीमांसा, न्याय, सांख्य और वेंदान्त) का अध्ययन करेगे।

15 से 25 वर्ष के बालको की शिक्षा के पाठ्यक्रम मे स्वामी दयानन्द ने वेदों को तथा भैतिक दृश्टि से उपयोगी विषयों को स्थान दिया। भौतिक शास्त्र के मध्य उन्होनें वैधशास्त्र, धर्नुविद्या, सैन्य शिक्षा, राजनीतिशास्त्र, अर्थशाास्त्र, कानुन, गायन शिल्पकला, विज्ञान, भूगोल आदि को रखा।

शोध के निश्कर्ष

आज शिक्षा एक व्यवसाय बन गई है जिसका मुख्य उद्देश्य धनोपर्जन हो गया है और विद्यार्थी समुदाय अपने रास्ते से भटक रहा है जबकि भारत के शिक्षा –शास्त्रीयों ने शिक्षा का जीवन से घनिष्ट सम्बन्ध बताया है। उनकी दृष्टि में शिक्षा का महानतम् उद्देश्य जीवन के समस्त अंगों एवं पंक्षो इस रूप में विकास करना है कि सम्पूर्णताश्की प्राप्ति हो सके।

अतः शिक्षा – शास्त्रीयों के शिक्षा –दर्शन एंव शौक्षिक विचारों का अध्ययन के पष्चात शोधकर्ता ने से निश्कर्ष प्राप्त किये है :–

1. भारतीय शिक्षा –शास्त्रीयों ने पुस्तकों को अधिक महत्व न देकर प्रकृति को महत्वपूर्ण माना है। वर्तमान में भी इनके विचारों पर चलने की आवष्यकता है क्योकि वर्तमान शिक्षा पुस्तकीय शिक्षा बन कर रह गई है। जिससे दिन–प्रतिदिन बेरोजगारी बढती जा रही है।
2. वर्तमान शिक्षा पाठ्यक्रम में भी भारत के प्रमुख शिक्षा शास्त्रीयों के पाठ्यक्रम के अनुसार ही आदर्शो, परत्पराओं, प्रथाओ और रीति– रिवाजों को स्थान दिया जाना चाहिए।
3. शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य में पाया कि शिक्षा का कार्य केवल बालकों को उच्च अफसर, निपुण, क्लर्क या वैज्ञानिक बना देना नही है बल्कि उन्हें अनुभव की पूर्णता द्वारा पूर्ण मनुष्य के रूप में विकसित करना होना चाहिए। जबकि वर्तमान शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य रोजगार प्राप्त कराना है।

भावी शोध हेतु सुझाव

1. भावी शोधकर्ता द्वारा "पाश्चात्य एंव भारतीय दृष्टिकोंण में शिक्षा शास्त्रीयों के शैक्षिक उपागमों का अध्ययन" पर शोध कार्य किया जा सकता है।
2. भारतीय शिक्षा शास्त्रीयों के शैक्षिक उपागमों का वर्तमान शिक्षा में महत्व का अध्ययन पर भावी शोध कार्य किया जा सकता है।
3. भावी शोधकर्ता द्वारा "भारत के प्रमुख शिक्षा शास्त्रीयों के शैक्षिक उपागम का तुलनात्मक अध्ययन" पर शोध कार्य किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, एस. के – शिक्षा के तात्विक सिद्धान्त
2. भाटिया, बी. डी. कमला – शिक्षक पद्धति और सिद्धान्त
3. गॉधी, एम. के. – बुनियादी शिक्षा, नवजीवन पब्लिशिंग हाऊस, अहमदाबाद
4. डॉ. कपिल, एच. के. – अनुसंधान विधियॉ (1994–1995) कचहरी घाट, आगरा
5. कृपलानी, जे.बी. – महात्मा गॉधी जीवन औरचिन्तन दिल्ली प्रकाशन मंदिर (1978)
6. टैगोर, रविन्द्रनाथ – गीतांजली, (1968), सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली
7. कुमार सुशील – युग पुरूष विवेकानन्द
8. डॉ बघेला, हेत सिंह – शिक्षा सिद्धान्त व आधुनिक भारत में शिक्षा (1993)
9. बुच, एम. बी. – थर्ड सर्वे ऑफ एजूकेशन रिसर्च, बोल्यूम 1, (1978–83)

पत्र एंव पत्रिकाएं

1. 21 वीं सदी मे शिक्षा – योजना (सितम्बर 2002)
2. लेस्त वी. फॉरगेत – विश्व भारती बुलेटिन (सिल्बर जुबली नवम्बर)
3. सुनील चन्द्र सरकार – टैगौर एजूकेशन फिलॉसफी एण्ड एक्सपेरीमेण्ट विश्व भारती (1961)
4. शिक्षा एंव सामाजिक – क्रोनिकल (फरवरी 1999), क्रोनिकल पब्लिकेशन निबन्ध प्रा0 लि0 नई दिल्ली